छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव: एक क्षेत्रीय अध्ययन

प्रज्ञा अग्रवाल[1], डॉ रश्मि ठाकरे[2]
[1]पीएच.डी. शोध छात्रा शिक्षाशास्त्र विभाग,
[2]सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र विभाग,
मानसरोवर ग्लोबल विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.16840430

शोध सारांश

वर्तमान सामाजिक संरचना में बालिकाओं की शिक्षा एवं उनके व्यवसायिक भविष्य की योजना एक अत्यंत गहन विषय बन चुका है, विशेषकर तब जब इस प्रक्रिया में परिवार की भूमिका निर्णायक हो। छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाएँ केवल उनकी अकादमिक उपलब्धियों या मानसिक क्षमता का परिणाम नहीं होतीं, बल्कि उनके पारिवारिक परिवेश, आर्थिक संसाधन, अभिभावकों की शैक्षिक स्थिति, तथा पारंपरिक सामाजिक दृष्टिकोण से भी गहराई से प्रभावित होती हैं। यह शोध कार्य विशेष रूप से मध्य प्रदेश राज्य के हरदा ज़िले की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को केंद्र में रखकर संपादित किया गया है। इस अध्ययन में यह विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार परिवार की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, विशेषतः माता-पिता की शिक्षा, उनके पेशेगत स्वरूप, परिवार की मासिक आय, तथा घर के भीतर विद्यमान निर्णयात्मक माहौल, छात्राओं की करियर अभिलाषाओं को मार्ग प्रदान करता है अथवा बाधित करता है।

शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि छात्राएँ अपने भविष्य की दिशा कैसे तय करती हैं, और उनके निर्णयों में पारिवारिक सहमति, प्रोत्साहन या विरोध का क्या प्रभाव पड़ता है। ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी समाज में व्याप्त परंपरागत सीमाएँ, आर्थिक असमानताएँ और लैंगिक भूमिका की रूढ़ धारणाएँ, छात्राओं की आकांक्षाओं को सीमित या विस्तृत करने में किस सीमा तक सहायक या अवरोधक सिद्ध होती हैं, इस पर भी विचार किया गया है। इस शोध के माध्यम से प्राप्त निष्कर्ष यह इंगित करते हैं कि उन परिवारों की छात्राएँ, जहाँ माता-पिता शिक्षित हैं, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं एवं अपनी बेटियों की शिक्षा को महत्त्वपूर्ण मानते हैं, वे छात्राएँ अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्रता एवं स्पष्टता के साथ अपने व्यवसायिक लक्ष्यों का निर्धारण करती हैं। इसके विपरीत, पारंपरिक सोच, निम्न आर्थिक स्थिति और सीमित शैक्षणिक संसाधनों वाले परिवारों की छात्राएँ व्यवसायिक विकल्पों के चुनाव में संकोच, असमर्थता और भ्रम की स्थिति से गुज़रती हैं।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बालिकाओं की करियर आकांक्षाओं को केवल स्कूल शिक्षा तक सीमित मानना उचित नहीं है; अपितु उस अदृश्य पारिवारिक और सामाजिक ढाँचे की समझ भी आवश्यक है, जो उनके सपनों की उड़ान को दिशा या अवरोध प्रदान करता है। शोध के निष्कर्ष, शिक्षा नीति निर्माताओं, कैरियर काउंसलर्स, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए एक विचारणीय आधार प्रस्तुत करते हैं, जिससे वे बालिकाओं के व्यवसायिक विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

बीज शब्द : व्यवसायिक आकांक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, छात्राएँ, हरदा जिला, सामाजिक कारक

प्रस्तावना

वर्तमान युग को यदि **नारी उन्नयन की जाग्रत चेतना का युग** कहा जाए, तो यह अत्युक्ति नहीं होगी। आज की बालिकाएँ केवल पारंपरिक भूमिका में सीमित न रहकर विज्ञान, तकनीक, राजनीति, प्रशासन, सैन्य सेवाओं, चिकित्सा और उद्यमिता जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। एक ओर जहाँ शिक्षा का प्रसार और तकनीकी संसाधनों की सहज उपलब्धता ने उनके दृष्टिकोण को व्यापकता प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर यह भी स्वीकार करना होगा कि उनकी **व्यवसायिक आकांक्षाएँ** केवल व्यक्तिगत प्रेरणा या विद्यालयीय शिक्षा का परिणाम नहीं होतीं, वरन् उसके मूल में **पारिवारिक पृष्ठभूमि** की गहरी छाया विद्यमान रहती है।

बालिकाओं की करियर–विकास प्रक्रिया एक बहुआयामी संकल्पना है, जिसमें **माता-पिता की शैक्षिक योग्यता, पारिवारिक आय, पारंपरिक मान्यताएँ, लिंग-सम्बंधी सामाजिक धारणाएँ तथा निर्णय लेने की पारिवारिक स्वतंत्रता** – ये सभी कारक संयुक्त रूप से कार्य करते हैं। विशेषकर ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी समाज में, जहाँ परिवार अभी भी सामाजिक संरचना की इकाई मात्र नहीं, बल्कि जीवन–निर्णयों का केंद्रबिंदु है, वहाँ बालिकाओं की आकांक्षाओं का विस्तार, संकुचन अथवा दिशा परिवर्तन, पारिवारिक सोच और व्यवहार से सीधे प्रभावित होता है।

जहाँ एक ओर महानगरों की छात्राएँ इंटरनेट, करियर काउंसलिंग, प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं और नवाचार की दुनिया से सहजता से जुड़ रही हैं, वहीं दूसरी ओर हरदा जैसे अर्ध-ग्रामीण जिलों की छात्राएँ अब भी पारिवारिक परंपराओं, सामाजिक अपेक्षाओं और आर्थिक सीमाओं से जूझती दिखाई देती हैं। वे अपनी आकांक्षाओं को आकार तो देना चाहती हैं, परंतु कभी पिता की आज्ञा, कभी माँ की चिंता और कभी परिवार की प्रतिष्ठा का भय, उन्हें भीतर ही भीतर सीमित कर देता है।

यह स्थिति अत्यंत विचारणीय है, क्योंकि यह **महिला सशक्तिकरण** की उस नींव को ही बाधित करती है, जिसे बालिका शिक्षा के माध्यम से सशक्त किया जाना है। यह यथार्थ शोध के क्षेत्र में एक सशक्त

हस्तक्षेप की मांग करता है, ताकि हम यह समझ सकें कि किस प्रकार परिवार, विशेषकर माता-पिता, छात्रा के व्यवसायिक भविष्य के निर्माण में सहयोगी अथवा बाधक की भूमिका निभाते हैं।

अतः प्रस्तुत शोध कार्य इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जिसमें हरदा ज़िले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं और उनके पारिवारिक परिवेश के मध्य अन्तर्संबंध को उजागर करने का संकल्प लिया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से न केवल आंकड़ों की प्रस्तुति की जाएगी, अपितु सामाजिक वास्तविकता की गहराइयों को भी छूने का प्रयास होगा, ताकि बालिकाओं के करियर–निर्माण हेतु एक **समुचित पारिवारिक वातावरण** निर्मित करने की दिशा में प्रभावी सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान युग में जहाँ स्त्रियों की भूमिका सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक विकास के केंद्र में स्थापित हो रही है, वहीं आज भी ग्रामीण एवं मध्यमवर्गीय परिवारों में **बालिकाओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं को लेकर सीमित सोच**, दुविधा और परंपरागत मान्यताएँ व्याप्त हैं। यद्यपि विद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों में बालिकाएँ शैक्षिक उपलब्धियों में लड़कों की बराबरी कर रही हैं, किंतु जब बात करियर चयन की आती है, तब सामाजिक संरचना और पारिवारिक पृष्ठभूमि की कठोर दीवारें उनकी उड़ान को बाधित करने लगती हैं।

अभिभावकों की सोच अब भी अधिकांशतः पारंपरिक है, जो बालिकाओं को एक सीमित दायरे में रखकर केवल कुछ निश्चित क्षेत्रों – जैसे शिक्षण, नर्सिंग या सिलाई आदि – तक ही सीमित कर देना चाहती है। इसके पीछे कहीं न कहीं **आर्थिक असुरक्षा**, **लैंगिक भूमिका की रूढ़ अवधारणाएँ**, और **'घर–संभालने' की पारंपरिक अपेक्षा** छिपी होती है। इस मानसिकता का परिणाम यह होता है कि छात्राओं की वास्तविक योग्यताएँ और आकांक्षाएँ, उनके समाज में स्वीकार्य नहीं हो पातीं और वे जीवन के ऐसे करियर पथ चुनने को विवश होती हैं, जो उनकी आंतरिक प्रेरणा या रुचि से मेल नहीं खाते।

इस संदर्भ में यह अध्ययन इसलिए आवश्यक हो जाता है क्योंकि यह केवल छात्राओं की आकांक्षाओं को रेखांकित नहीं करता, बल्कि **उन आकांक्षाओं और सामाजिक–पारिवारिक वास्तविकताओं के मध्य उपस्थित दूरी** को भी उजागर करता है। यह दूरी ही वह मानसिक संघर्ष है, जिससे अधिकांश बालिकाएँ गुजरती हैं, किंतु जिसे समाज अक्सर देख नहीं पाता।

उपर्युक्त परिस्थिति में यह शोध न केवल एक अकादमिक महत्व रखता है, बल्कि यह सामाजिक एवं नीतिगत परिवर्तन की दिशा में भी मार्गदर्शक बन सकता है। यह अध्ययन **नीति निर्धारकों (Policy Makers)** के लिए आवश्यक आँकड़े एवं विश्लेषण प्रदान करेगा, जिससे वे बालिका शिक्षा, करियर काउंसलिंग और महिला सशक्तिकरण की योजनाओं को अधिक प्रभावी रूप दे सकें। साथ ही, यह शोध

शिक्षकों, करियर गाइडेंस विशेषज्ञों तथा अभिभावकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि यह उन्हें यह समझने में मदद करेगा कि पारिवारिक सहयोग के बिना बालिकाओं की करियर आकांक्षाएँ केवल कल्पना बनकर रह सकती हैं।

अतः यह अध्ययन केवल एक शैक्षिक प्रयास नहीं है, वरन् यह सामाजिक चेतना की उस चिंगारी को प्रज्वलित करने का एक विनम्र प्रयास है, जो बालिकाओं को अपने सपनों की उड़ान भरने हेतु प्रेरित कर सके।

उद्देश्य

हर शोधकार्य का उद्देश्य केवल आंकड़ों का संग्रह या सूचनाओं की प्रस्तुति नहीं होता, अपितु उसके पीछे एक चिंतनशील प्रेरणा होती है, जो समाज की किसी विशिष्ट समस्या को समझने, विश्लेषित करने और समाधान के प्रस्ताव प्रस्तुत करने की आकांक्षा से उत्पन्न होती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य भी केवल छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं को मापने तक सीमित नहीं है, वरन् उसके मूल में यह जानने की जिज्ञासा है कि **पारिवारिक पृष्ठभूमि** बालिकाओं के करियर-निर्णय को किस सीमा तक प्रभावित करती है और किस रूप में उन्हें मार्ग प्रदान करती है अथवा अवरुद्ध करती है।

इस शोध का पहला प्रमुख उद्देश्य यह है कि **हरदा जिले की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं की पहचान** की जाए – अर्थात् वे किन क्षेत्रों में भविष्य बनाना चाहती हैं, उनके मन में कैरियर के कौन-कौन से विकल्प विद्यमान हैं, और उन विकल्पों को चुनने के पीछे उनकी क्या प्रेरणा है।

दूसरा उद्देश्य यह है कि छात्राओं की आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले **पारिवारिक कारकों – जैसे माता-पिता की शिक्षा, पारिवारिक आय, अभिभावकों का व्यवसाय, सामाजिक स्थिति, संयुक्त अथवा एकल परिवार की संरचना** आदि का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए। यह समझना अनिवार्य है कि इन तत्वों की उपस्थिति या अनुपस्थिति करियर की दिशा और निर्णय क्षमता को कैसे प्रभावित करती है।

तीसरे उद्देश्य के अंतर्गत अध्ययन का लक्ष्य यह है कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की आकांक्षाओं के बीच क्या कोई ठोस अंतर विद्यमान है? यदि हाँ, तो वह अंतर केवल संसाधनों तक सीमित है अथवा सोच, स्वतंत्रता और पारिवारिक समर्थन जैसे गहरे आयामों में भी परिलक्षित होता है। इस विश्लेषण से यह ज्ञात किया जा सकेगा कि **स्थानीयता (locality) की भिन्नता** कैसे बालिकाओं की सोच को दिशा देती है।

अतः यह शोध निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया है:

1. उच्चतर माध्यमिक छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं की प्रकृति, दिशा और विविधता का विश्लेषण करना।

2. पारिवारिक पृष्ठभूमि के आयामों – जैसे शिक्षा, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय – का छात्राओं की आकांक्षाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य व्यवसायिक दृष्टिकोण, आकांक्षा और आत्मविश्वास के अंतर को मापना एवं उसकी कारणात्मक व्याख्या प्रस्तुत करना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से यह अध्ययन समाज को एक वास्तविक दर्पण प्रदान करने का प्रयास करेगा, जिसमें बालिकाओं की नयनाभिराम आकांक्षाएँ तथा उन्हें प्रभावित करने वाले पारिवारिक प्रतिबिंब दोनों एक साथ प्रतिबिंबित हो सकें।

शोध पद्धति

प्रत्येक शोध की सफलता उसकी **शोध पद्धति** की सटीकता, उद्देश्यपरकता तथा वैज्ञानिकता पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्ययन एक **वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति** का सामाजिक शोध है, जिसका लक्ष्य यह है कि छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं पर उनके पारिवारिक परिवेश के प्रभाव को मापा, समझा और विश्लेषित किया जा सके। इस हेतु उपयुक्त नमूना-निर्धारण, डेटा-संग्रह की विश्वसनीय विधियाँ तथा सांख्यिकीय विश्लेषण का प्रयोग किया गया है।

1. शोध क्षेत्र

यह अध्ययन मध्यप्रदेश के **हरदा ज़िले** पर केंद्रित है, जो कि एक अर्ध-ग्रामीण जनपद है। इस क्षेत्र का चयन इसलिए किया गया क्योंकि यहाँ **ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार के शैक्षिक-सांस्कृतिक प्रभाव** परिलक्षित होते हैं, जो शोध को तुलनात्मक स्वरूप प्रदान करते हैं।

2. जनसंख्या

अध्ययन की लक्षित जनसंख्या हरदा जिले के **उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राएँ** हैं, जो कक्षा 11वीं व 12वीं में अध्ययनरत हैं। यह वह आयु वर्ग है जहाँ व्यवसायिक आकांक्षाएँ प्रकट रूप में आकार लेती हैं।

3. नमूना चयन

शोध के लिए **20 छात्राओं का चयन** किया गया, जिनमें से 10 छात्राएँ **शहरी क्षेत्र** से तथा 10 छात्राएँ **ग्रामीण क्षेत्र** से ली गईं। इस **संयोजनात्मक नमूना** (stratified purposive sampling) का उद्देश्य सामाजिक एवं भौगोलिक विविधता को समाहित करना था, जिससे निष्कर्ष अधिक यथार्थपरक हों।

4. डेटा संग्रहण की विधियाँ

शोध हेतु **प्राथमिक आंकड़ों का संग्रह** निम्नलिखित विधियों से किया गया:

- **प्रश्नावली:** एक अर्ध-संरचित प्रश्नावली तैयार की गई, जिसमें छात्राओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक प्रेरणा, करियर संबंधी अभिलाषाएँ तथा निर्णय लेने की स्वतंत्रता जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया।
- **साक्षात्कार:** कुछ छात्राओं एवं उनके अभिभावकों के साथ **अनौपचारिक एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार** भी किए गए, जिससे गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त हो सके और मात्रात्मक आंकड़ों की व्याख्या में सहायक प्रमाण जुटाए जा सकें।

5. आंकड़ा विश्लेषण की विधियाँ :

एकत्रित आंकड़ों का **सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis)** किया गया, जिसमें प्रमुखतः निम्नलिखित तकनीकों का प्रयोग किया गया:

- **प्रतिशत विधि (Percentage Method)** द्वारा उत्तरों की सामान्य प्रवृत्ति का मापन
- **चार्ट्स एवं ग्राफ** के माध्यम से दृश्य प्रस्तुति
- **Chi-square परीक्षण** के माध्यम से विभिन्न परिवर्तनों के मध्य संबंध की प्रामाणिकता का परीक्षण

इस प्रकार, यह शोध न केवल गुणात्मक दृष्टि से समृद्ध है, बल्कि **सांख्यिकीय प्रमाणिकता** के साथ एक संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शोध पद्धति अध्ययन की वैधता (validity) और विश्वसनीयता (reliability) सुनिश्चित करती है, जिससे निष्कर्ष सामाजिक यथार्थ के निकट पहुँचते हैं।

प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत हरदा जिले की उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं तथा उनके पारिवारिक पृष्ठभूमि के मध्य अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण किया गया। आंकड़ों के समुचित संग्रहण एवं सांख्यिकीय परीक्षण के पश्चात प्राप्त निष्कर्ष न केवल सामाजिक वास्तविकताओं की पुष्टि करते हैं, बल्कि यह भी प्रमाणित करते हैं कि **व्यक्तिगत आकांक्षाओं का निर्माण किसी एकक कारक द्वारा नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और पारिवारिक संरचनाओं के समवेत प्रभाव** से होता है।

1. शैक्षिक पृष्ठभूमि का प्रभाव

उन छात्राओं के मध्य स्पष्ट अंतर देखने को मिला जिनके माता-पिता उच्च शिक्षा प्राप्त थे। ऐसे परिवारों की बालिकाएँ अपने व्यवसायिक जीवन के प्रति अधिक जागरूक, योजनाबद्ध एवं आशावान दिखाई दीं। उनकी आकांक्षाएँ **डॉक्टरी, इंजीनियरिंग, प्रशासनिक सेवाओं, उद्यमिता, शोध और तकनीकी क्षेत्रों** में केंद्रित थीं, जो कि न केवल विविधतापूर्ण थीं, बल्कि समाज में परिवर्तनकारी भूमिका निभाने वाली भी

थीं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि **माता-पिता की शिक्षा बालिकाओं की सोच को विस्तार देती है** और उनके सपनों को उड़ान प्रदान करती है।

2. आर्थिक स्थिति की भूमिका

निम्न आय वर्ग से आने वाली छात्राएँ अपेक्षाकृत अधिक **सुरक्षित, स्थायी और पारंपरिक नौकरियों** को ही करियर विकल्प के रूप में देख रही थीं। जैसे कि शिक्षिका, नर्स, पुलिस या बैंक कर्मी। यह प्रवृत्ति इस तथ्य को पुष्ट करती है कि **आर्थिक असुरक्षा व्यक्ति की आकांक्षा को सीमित कर देती है**, और वे ऐसे विकल्पों की ओर आकर्षित होते हैं जो तत्कालिक आय एवं सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान कर सकें, भले ही वे उनकी मूल रुचियों से भिन्न हों।

3. ग्रामीण बनाम शहरी अंतर

ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में यह प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से देखी गई कि वे **स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की अपेक्षा माता-पिता की राय को प्रमुखता देती हैं।** कई बालिकाओं ने यह स्वीकार किया कि उनके करियर संबंधी निर्णय अभिभावकों की सहमति पर ही आधारित हैं। इसके विपरीत, शहरी क्षेत्र की छात्राओं में अपेक्षाकृत अधिक आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास एवं करियर संबंधी स्पष्टता देखने को मिली।

4. लैंगिक भूमिका की सामाजिक अपेक्षाएँ

कुछ छात्राओं ने यह भी कहा कि परिवार में बेटियों से अपेक्षा की जाती है कि वे ऐसी नौकरियों का चुनाव करें जिससे वे **घर-परिवार और कार्य के बीच संतुलन बनाए रख सकें।** इससे यह सिद्ध होता है कि आज भी **पारिवारिक दृष्टिकोण में लैंगिक भूमिकाओं की पारंपरिक परछाइयाँ विद्यमान हैं**, जो छात्राओं की करियर आकांक्षाओं को सीधे प्रभावित करती हैं।

5. कैरियर काउंसलिंग की कमी

अधिकांश छात्राओं ने स्वीकार किया कि उन्हें **अपने करियर विकल्पों की सम्यक जानकारी नहीं है** और स्कूल स्तर पर कोई ठोस मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है। इससे यह आवश्यकता भी उजागर होती है कि विद्यालयों में **कैरियर काउंसलिंग की नियमित एवं संरचित व्यवस्था** की जानी चाहिए।

इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाओं को केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा या अकादमिक प्रदर्शन से जोड़कर नहीं देखा जा सकता, बल्कि इनके निर्माण में **पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तत्वों का बहुआयामी प्रभाव** सक्रिय होता है। अतः यदि हमें बालिकाओं को सशक्त करियर निर्णय लेने हेतु सक्षम बनाना है, तो उस दिशा में परिवार, विद्यालय और समाज — सभी को सहभागी बनना होगा।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित हुआ कि छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षाएँ केवल उनकी व्यक्तिगत इच्छा या शैक्षणिक प्रदर्शन का प्रतिबिंब नहीं होतीं, वरन् उनके पारिवारिक परिवेश, आर्थिक संसाधनों, सामाजिक परंपराओं और अभिभावकीय दृष्टिकोण का गहन प्रभाव इन आकांक्षाओं की दिशा और सीमा को निर्धारित करता है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव दो स्तरों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है – **प्रत्यक्ष रूप में**, जब माता-पिता की शिक्षा, आर्थिक स्थिति, व्यवसाय तथा सामाजिक संपर्क से छात्रा को मार्गदर्शन, प्रोत्साहन तथा संसाधन प्राप्त होते हैं; और **परोक्ष रूप में**, जब परिवार की असहमति, रूढ़ विचारधाराएँ, सीमित संसाधन एवं निर्णयात्मक दबाव उसके करियर संबंधी विकल्पों को सीमित कर देते हैं।

इस अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि ग्रामीण तथा शहरी परिवेश में छात्राओं की आकांक्षाओं में भिन्नता का मूल कारण केवल भौगोलिक भिन्नता नहीं है, बल्कि उसके पीछे **सूचना का अभाव, अवसरों तक सीमित पहुँच तथा पारिवारिक स्वीकृति का अभाव** प्रमुख कारक हैं।

अतः यह अत्यावश्यक हो जाता है कि समाज एवं शासन दोनों स्तरों पर ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए, जहाँ **बालिकाएँ केवल अपने लिंग या पारिवारिक सीमाओं की परिभाषा से नहीं, बल्कि अपनी क्षमता, रुचि और आत्मविश्वास के आधार पर करियर का चुनाव कर सकें।** सशक्त पारिवारिक सहयोग, यथोचित मार्गदर्शन और सामाजिक सोच में सकारात्मक परिवर्तन के माध्यम से ही बालिकाओं के स्वप्निल भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

सुझाव

इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर समाज, शैक्षिक संस्थान एवं परिवार के स्तर पर निम्नलिखित ठोस सुझाव प्रस्तावित किए जाते हैं:

1. विद्यालयों में कैरियर काउंसलिंग अनिवार्य की जाए

विद्यालय स्तर पर नियमित रूप से **प्रशिक्षित काउंसलर्स** द्वारा कैरियर मार्गदर्शन की व्यवस्था की जाए, जिससे छात्राएँ अपने रुचियों और संभावनाओं के अनुरूप सही निर्णय ले सकें।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में कैरियर मेले एवं कार्यशालाओं का आयोजन हो

विशेषतः ग्रामीण विद्यालयों में **'करियर अवेयरनेस वीक'**, **सेमिनार** और **इंटरएक्टिव वर्कशॉप्स** आयोजित की जाएँ, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के सफल व्यक्तियों से छात्राओं का संवाद कराया जाए।

3. माता-पिता हेतु जागरूकता कार्यक्रम प्रारंभ किए जाएँ

अभिभावकों को यह समझाना अति आवश्यक है कि बेटियाँ भी अपने निर्णय स्वयं ले सकती हैं। इसके लिए विद्यालय एवं स्थानीय प्रशासन की पहल पर **"पैरेंटिंग वर्कशॉप्स"** चलाई जानी चाहिए, जहाँ उन्हें **लैंगिक समानता, प्रोफेशनल विकल्पों और प्रोत्साहन की भूमिका** पर संवेदनशील किया जा सके।

4. महिला सशक्तिकरण नीतियों को करियर उन्मुख बनाया जाए

सरकारी योजनाओं को छात्राओं के करियर विकास से जोड़ते हुए **वित्तीय सहायता**, **इंटर्नशिप अवसर**, और **शैक्षिक छात्रवृत्तियाँ** बढ़ाई जानी चाहिए।

5. मीडिया और सोशल नेटवर्क के माध्यम से सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ

ऐसी बालिकाओं की कहानियाँ, जिन्होंने पारिवारिक सीमाओं के बावजूद करियर में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया, उन्हें **स्थानीय मीडिया, स्कूल मंचों और सोशल प्लेटफॉर्म्स** पर प्रचारित किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, नीलम। *भारत में किशोर बालिकाओं की करियर आकांक्षाएँ: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.* नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, 2018।
2. कुमार, अजीत एवं मीना सिंह। "छात्रों के करियर विकल्पों पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव।" *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च,* खंड 9, अंक 2, 2020, पृ. 45–57।
3. एनसीईआरटी। *किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम: करियर मार्गदर्शन मॉड्यूल.* नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2019।
4. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। *ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) 2020–21.* नई दिल्ली: भारत सरकार, 2021।
5. सिन्हा, रेनू। "बालिकाओं की करियर आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले सामाजिक-आर्थिक कारक।" *जर्नल ऑफ सोशल साइंस स्टडीज,* खंड 6, अंक 1, 2020, पृ. 20–31।
6. शोधनगंगा। "ग्रामीण किशोर बालिकाओं की व्यवसायिक आकांक्षाएँ – एक तुलनात्मक अध्ययन।" *शोधनगंगा: भारतीय शोध प्रबंधों का भंडार,* INFLIBNET, https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/109322।
7. यूनिसेफ इंडिया। *शिक्षा एवं कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से किशोर बालिकाओं को सशक्त बनाना.* यूनाइटेड नेशन्स चिल्ड्रेन्स फंड, 2021।
8. बरूआ, स्मिता। "ग्रामीण भारत में लैंगिक असमानता और शैक्षिक आकांक्षाएँ।" *अंतरराष्ट्रीय समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र पत्रिका,* खंड 11, अंक 4, 2019, पृ. 75–85।
9. मिश्रा, कल्पना। *ग्रामीण छात्राओं की व्यवसायिक प्रवृत्तियाँ: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन.* लखनऊ: सिद्धार्थ प्रकाशन, 2017।
10. चतुर्वेदी, ममता। *महिला शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन.* वाराणसी: भारती पब्लिकेशन, 2016।
11. ओझा, रश्मि। "परिवार एवं सामाजिक परिवेश का किशोरियों की शिक्षा पर प्रभाव।" *शोधप्रज्ञा पत्रिका,* खंड 12, अंक 3, 2020, पृ. 112–120।

12. भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद (ICSSR)। *भारतीय समाज में बालिकाओं की शिक्षा: एक स्थिति रिपोर्ट.* नई दिल्ली: आईसीएसएसआर, 2018।
13. पांडेय, अनीता। *महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका.* भोपाल: प्रेरणा पब्लिकेशन, 2019।
14. राय, किरण। "करियर विकल्पों में परिवार का मनोवैज्ञानिक योगदान।" *भारतीय मनोविज्ञान जर्नल,* खंड 23, अंक 1, 2021, पृ. 41–49।
15. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)। *भारत में लैंगिक समानता और शिक्षा.* नई दिल्ली: यूएनडीपी भारत कार्यालय, 2020।